अग्रवाल महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा अतिथि व्याख्यान का आयोजन

आज दिनांक 09-02-2022 को अग्रवाल महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा ऑनलाइन माध्यम से एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान का आयोजन अग्रवाल महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ o कृष्ण कांत गुप्ता जी की सद्प्रेरणा से हुआ। अतिथि व्याख्यान का विषय-**"हिस्ट्री ऑफ प्रीहिस्ट्री एंड प्रोटोहिस्ट्री रिसर्चइज इन इंडिया"** रहा । मुख्य वक्ता के रूप में डॉ० सज्जन कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने बेहद ज्ञानवर्धक व सारगर्भित वक्तव्य दिया। इस अतिथि व्याख्यान में महाविद्यालय के इतिहास विभाग के अनेक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। अतिथि व्याख्यान का आरंभ सरस्वती वन्दना से हुआ । सर्वप्रथम अग्रवाल महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० कृष्ण कांत गुप्ता जी ने मुख्य वक्ता का स्वागत करते हुए, शुभकामनाएं दी व कहा कि प्रत्येक देश का अपना उन्नत व सुदृढ इतिहास होता है जिस पर गर्व किया जा सके और प्रागैतिहासिक काल व आद्य इतिहास का अतीत में स्थान अद्वितीय व महत्त्वपूर्ण है। तत्पश्चात इतिहास विभागाध्यक्ष व अतिथि व्याख्यान के संयोजक डॉ० जयपाल सिंह ने विद्यार्थियों को मुख्य वक्ता डॉ० सज्जन कुमार का परिचय दिया। मुख्य वक्ता डॉ o सज्जन कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि विगत आधी शताब्दी के दौरान हुई नवीनतम खुदाइयों, नई काल निर्धारण तकनीकियों एवं निरंतर विकसित होते वैचारिक ढाँचों ने भारतीय उपमहाद्वीप के प्रागैतिहासिक एवं आद्य ऐतिहासिक अतीत के बारे में हमारे नजरिये को काफी हद तक बदल दिया है। प्रागैतिहासिक मानव अतीत के उस भाग को कहते हैं जब मानव का अस्तित्व तो था परन्तु लेखन कला का आविष्कार नहीं हुआ था ।

मानव सभ्यता के आरंभिक काल अर्थात प्रागैतिहासिक काल को तीन भागों में बांटा गया है जिनका विषय में वक्ता ने सूक्ष्म विश्लेषण करते हुए विस्तारपूर्वक बताया। डॉ० सज्जन ने कहा कि प्रागैतिहासिक काल व आद्य इतिहास को अनुसंधान के दृष्टिकोण से आधुनिक परिपेक्ष्य में समझने की आवश्यकता है। साथ ही साथ मुख्य वक्ता ने पुरापाषाणकाल, मध्यपाषाणकाल, नवपाषाणकाल और गैर हडप्पाई ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियों की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डाला । अंत में विद्यार्थियों ने व्याख्यान के विषय से जुड़े अनेक प्रश्न पूछे , सभी जिज्ञासाओं का मुख्य वक्ता ने समाधान किया । इतिहास विभाग की डॉ० सुप्रिया ढांडा ने संचालन किया । टेक्निकल टीम से श्रीमती दीप्ति गोयल व डॉ० निधि गोयल का विशेष सहयोग रहा । अतिथि व्याख्यान मुख्य वक्ता के धन्यवाद ज्ञापन से समाप्त हुआ।